पाठ्यपुस्तक की मदद से आत्मकथा पर काम

छोटे लाल

मैंने कक्षा-6 के बच्चों के साथ एससीईआरटी की पाठ्यपुस्तक के '*चम्बल की आत्मकथा*' नामक पाठ पर काम किया।

पाठ के शीर्षक के अनुरूप मैंने कुछ सवालों से शुरुआत की – आत्मकथा का क्या अर्थ है? इसे कौन लिखता है? आत्मकथा लिखने के पीछे लेखक का मन्तव्य क्या होता है? बच्चों के साथ उपरोक्त प्रश्नों पर विमर्श करने के दौरान यह बात उभरकर आई कि व्यक्ति विशेष के जीवन में घटित सुखद और दुखद घटनाओं व संघर्षों का स्वयं द्वारा किया गया वर्णन आत्मकथा है। इसे लिखने के पीछे उद्देश्य यह होता है कि आने वाली पीढ़ियाँ व्यक्ति के जीवन-संघर्ष को समझ पाएँ साथ ही उन सभी पहलुओं का विवेचन करते हुए स्वयं के स्तर पर यह समझ बना पाएँ कि किन परिस्थितियों में कैसा व्यवहार करना है, किस प्रकार की रणनीतियाँ सफलता व असफलता का कारण बनती हैं। इस विमर्श के बाद बच्चों के साथ यह बातचीत की गई कि आप अपने स्वयं के परिवारजनों के अतीत पर बातचीत करके उसे लिखकर लाएँ। लगभग दो-तिहाई बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी के जीवन में घटी हुई घटनाओं को एक पृष्ठ में लिखकर लाए। अगले दिन बच्चों की लिखित सामग्री पर विमर्श किया गया। इस विमर्श में इस मुद्दे को केन्द्र में रखा गया कि किसी व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं को किस तरह से पठनीय स्वरूप में लिखा जा सकता है। साथ ही उन्हें इस बात का भी एहसास हुआ कि किसी व्यक्ति विशेष के अनुभव किस तरह से प्रेरणा व सबक़ लेने का ज़रिया बन सकते हैं।

इसके पश्चात *चम्बल की आत्मकथा* पाठ को पढ़ा गया। इस पाठ में मुख्य रूप से चम्बल का वर्तमान स्वरूप व इसका पर्यावरण एवं समाज के लिए योगदान का वर्णन है। ख़ासतौर पर अलग-अलग धाराओं के मिलने के बाद चम्बल की छटा का खूबसूरत विवेचन किया गया है। इसके साथ ही वर्तमान में हो रहे अन्धाधुन्ध प्रदूषण से चम्बल के प्राकृतिक स्वरूप पर पड़ रहे दुष्प्रभावों का वर्णन भी है जो कि वर्तमान पीढ़ी के लिए एक चेतावनी है। इसके साथ ही सिंचाई, बिजली बनाने, भूजल संवर्धन करने के साथ-साथ अपने आस-पास के पर्यावरण को समृद्ध करने में चम्बल के योगदान का उल्लेख किया गया है। पाठ के अन्त में चम्बल नदी किस तरह से अपने अस्तित्व को बचाने हेतु संघर्षरत है इसका विशेष वर्णन किया गया है।

इस पाठ के माध्यम से मुख्य रूप से तीन पक्षों को उजागर किया गया है। प्रथम तो यह है कि कोई व्यक्ति किस तरह से अपना अस्तित्व कायम करता है। यानी स्वयं को विश्वपटल पर स्थापित करने की प्रत्येक व्यक्ति की कहानी अपने आप में निराली होती है।

दूसरा पक्ष है – व्यक्ति विशेष का इस दुनिया की बेहतरी में क्या योगदान है। यानी किस तरह से कोई व्यक्ति स्वयं को सवंर्धित करते हुए परहित के लिए जीता है।

तीसरा पक्ष, उसके जीवन काल के संघर्षों का है जो उसके परिवेश में उत्पन्न होते हैं। इस तरह से इस पाठ पर काम करते हुए आत्मकथा पर स्पष्टता बनाई गई।

इसके पश्चात बच्चों को स्वयं के अतीत के बारे में सोचने और अपनी यादों को व्यवस्थित करने हेतु कहा गया। साथ ही उन्हें पुस्तकालय से किसी की 'आत्मकथा' पढ़ने के लिए कहा गया। हरिवंश राय बच्चन की पुस्तक 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के कुछ अंश बच्चों के साथ साझा किए गए। इस पूरे विवेचन में यह बात स्पष्ट रूप से उभरकर आती है कि पाठ्यपुस्तक शिक्षक को बस एक आधार

देती है या यूँ कहें कि पाठ्यपुस्तकों को सिर्फ़ एक मार्गदर्शिका के रूप में ही देखा जा सकता है। केवल पाठ्यपुस्तकों के पाठों पर केन्द्रित होकर पढ़ाना, छात्र-छात्राओं को पाठों के वर्णन की सीमा में सीमित करना है।

पाठ-केन्द्रित शिक्षण-प्रक्रिया में न केवल पाठ-विशेष केन्द्रीय भाव विलुप्त होता नज़र आता है बल्कि शिक्षक की भूमिका भी सीमित होती नज़र आती है। जब हम सिर्फ़ विषयवस्तु केन्द्रित अध्यापन करवाते हैं तो विषयवस्तु के इतर के उदाहरण शामिल नहीं कर पाते और न ही बच्चे के परिवेश के अनुभवों को जगह दे पाते हैं। ऐसी स्थिति में हम सिर्फ़ सूचनाओं का ही सम्प्रेषण कर पाते हैं। शिक्षक के रूप में हम विषयवस्तु की समझ को बच्चों की परिवेशीय समझ के साथ सन्दर्भित नहीं कर पाते। इसके फलस्वरूप बच्चों द्वारा स्वतंत्र रूप से ज्ञान-निर्माण करने की प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाती है जो सीखने की प्रक्रिया का अहम हिस्सा है। ऐसा करते हुए शिक्षक अपनी भूमिका को न केवल सीमित करता है बल्कि पूरक पठन-सामग्री व विमर्श के अनुभव से भी विद्यार्थियों को वंचित रखता है।

इसके विपरीत, इस पाठ पर काम की शुरुआत बच्चों के जीवन सन्दर्भ को समेटते हुए की गई जिसकी पैरवी राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 करती है। साथ ही उन्हें अपने अतीत में झाँकने का मौक़ा भी दिया गया जिसके माध्यम से बच्चे अपने पूर्व-अनुभवों पर भी दृष्टिपात कर पाए। इसके अलावा

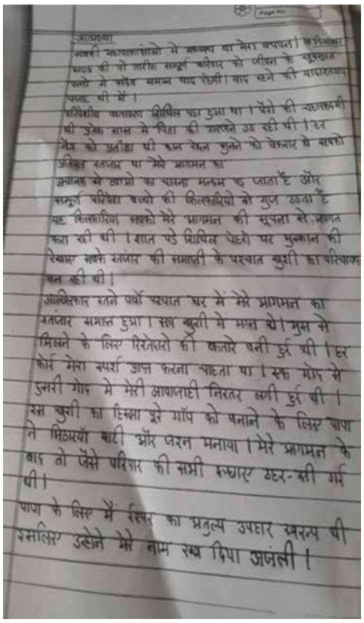

आत्मकथा

... खुशी का परिचायक बन रही थी।

आखिरकार इतने वर्षों पश्चात घर में मेरे आगमन का इंतजार समाप्त हुआ। सब खुशी में मग्न थे। मुझ से मिलने के लिए रिश्तेदारों की कतारें बनी हुई थी। हर कोई मेरा स्पर्श प्राप्त करना चाहता था। एक गोद से दूसरी गोद में मेरी आवाजाही निरंतर लगी हुई थी। इस खुशी का हिस्सा पूरे गाँव को बनाने के लिए पापा ने मिठाइयाँ बाँटी और जश्न मनाया। मेरे आगमन के बाद तो जैसे परिवार की सभी इच्छाएं ठहर-सी गई थी।

पापा के लिए मैं ईश्वर का अतुल्य उपहार स्वरूप थी इसलिए उन्होंने मेरा नाम रख दिया अंजली।

पूरक पठन-सामग्री का एक्सपोज़र भी बच्चों में स्वाध्याय की प्रेरणा जगाता है जो इस प्रक्रिया का अहम हिस्सा रही। आत्मकथा पर काम करने के इस अनुभव से बच्चों को स्वयं से जुड़ने के साथ-साथ प्रासंगिक पठन-सामग्री को जानने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

बच्चों द्वारा लिखी गई आत्मकथा का एक उदाहरण यहाँ दिया गया है। अंजलि के पिता ने उसकी पैदाइश के वक़्त के अपने मनोभावों को उससे साझा किया। अपने पिता की यादों को आधार बनाकर अंजलि ने अपनी आत्मकथा को लिखा।

छोटे लाल अगस्त, 2011 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ कार्यरत हैं। इसके पहले उन्होंने *बोध शिक्षा समिति*, अलवर में समन्वयक व फैसिलिटेटर के बतौर 11 वर्षों तक कार्य किया। वहाँ पर उन्होंने हिन्दी व गणित के रिसोर्स पर्सन की भूमिका में भी काम किया। साथ ही 15 छोटे स्कूलों को 'अच्छे स्कूल' के बतौर स्थापित करने के लिए उनके शिक्षकों, विद्यार्थियों और समुदाय के साथ गहन काम किया। इससे पहले उन्होंने राजस्थान सरकार द्वारा, मुख्यतः ग्रामीण इलाकों में लागू किए गए एक प्रयोग, *लोक जुम्बिश* प्रोजेक्ट में भी कार्य किया है। उनसे chhote.lal@azimpremjifounation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

कॉपी एडिटर : स्वाति भदौरिया